सीबीएसई कक्षा - 12 हिन्दी कोर वितान

पाठ – 03

अतीत में दबे पाँव

पाठ का सार- यह **ओम थानवी** के यात्रा-वृत्तांत और रिपोर्ट का मिला-जुला रूप है। उन्होंने इस पाठ में **विश्व के सबसे पुराने और नियोजित शहरों-मुअनजो-दड़ो तथा हड़प्पा** का वर्णन किया है। पाकिस्तान के सिंध प्रांत में मुअनजो-दड़ो ओर पंजाब प्रांत में हड़प्पा नाम के दो नगरों को पुरातत्वविदों ने खुदाई के दौरान खोज निकाला था। **मुअनजो-दड़ो ताम्रकाल का सबसे बड़ा शहर था**। मुअनजो-दड़ो अर्थात **मुर्दों का टीला**। यह नगर मानव निर्मित छोटे-छोटे टीलों पर बना था। मुअनजो-दड़ो में प्राचीन और बड़ा बौद्ध स्तूप है। इसकी नगर योजना अद्वितीय है। लेखक ने खंडहर हो चुके टीलों, स्नानागार, मृद-भांडों, कुओं-तालाबों, मकानों व मार्गों का उल्लेख किया है जिनसे शहर की सुंदर नियोजन व्यवस्था का पता चलता है। बस्ती में **घरों के दरवाजे मुख्य सड़क की ओर नहीं खुलते** हर घर में जल निकासी की व्यवस्था है, सभी नालियाँ की ढकी हुई हैं, पक्की ईटों का प्रयोग किया गया है।

नगर में चालीस फुट लम्बा ओर पच्चीस फुट चौड़ा एक **महाकुंड** भी है। इसकी दीवारें ओर तल पक्की ईटों से बने हैं। कुंड के पास **आठ स्नानगार** हैं। कुंड में बाहर के अशुद्ध पानी को न आने देने का ध्यान रखा गया। कुंड में पानी की व्यवस्था के लिए कुंआ है। एक **विशाल कोठार** भी है जिसमें अनाज रखा जाता था उन्नत खेती के भी निशान दिखते हैं-कपास, गेहूं, जौ, सरसों, बाजरा आदि के प्रमाण मिले हैं।

सिंधु घाटी सभ्यता में **न तो भव्य राजमहल मिलें हैं ओर ही भव्य मंदिर** नरेश के सर पर रखा मुकुट भी छोटा है। मुअनजो-दड़ो सिंधु घाटी का सबसे बड़ा नगर है फिर भी इसमें भव्यता व आडम्बर का अभाव रहा है। उस समय के लोगों ने कला ओर सुरुचि को महत्व दिया। नगर-नियोजन, धातु एवं पत्थर की मूर्तियाँ, मृद-भांड उन पर चित्रित मानव ओर अन्य आकृतियाँ मुहरें, उन पर बारीकी से की गई चित्रकारी एक पुरात्त्ववेत्ता के मुताबिक सिंधु सभ्यता की खूबी उसका सौंदर्य-बोध है जो “राजपोषित या धर्मपोषित न होकर समाजपोषित था।”